## ८. गजल

**सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**
**(१) गजल की पंक्तियों का तात्पर्य : (उत्तर: )**
(१) नींव के अंदर दिखो **हमें प्रशंसा और वाहवाही का लोभ त्यागकर नींव की ईंटों के समान कुछ अच्छा और सुदृढ़ काम करना चाहिए।**

(२) आईना बनकर दिखो **हमें ऐसी शख्सियत बनना चाहिए कि कैसी भी प्रतिकूल परिस्थिति क्यों न हो, हम विचलित न हों। बिना टूटे, बिना बिखरे हर परिस्थिति का डटकर सामना करें। अपने लक्ष्य को प्राप्त करें।**

**(२) कृति पूर्ण कीजिए: (उत्तर: )**
**मनुष्य से अपेक्षाएँ**
(१) मानवीय गुणों को अपनाना
(२) निराश और हताश लोगों के मन में आशा की किरण जगाना

**(३) जिनके उत्तर निम्न शब्द हों, ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए :**

**(१) भीड़**
**उत्तर :** कवि अक्सर किसी शक्ल को कहाँ देखना चाहता है?

**(२) जुगनू**
**उत्तर :** वक्त की धुंध में साथ रहने को किसने कहा?

**(३) तितली**
**उत्तर :** कवि खिलते फूल के स्थान पर कहाँ दिखने को कहता है?

**(४) आसमान**
**उत्तर :** अगर गर्द चल पड़ी है तो उसके द्वारा कहाँ पर लिखने की बात कही गई है ? और क्यों ? सरल व्याख्या कीजिये।

**(४) निम्नलिखित पंक्तियों से प्राप्त जीवन मूल्य लिखिए:**
**(१) आपको महसूस __भीतर देखो ।**
**उत्तर :** अपनी रचना 'गजल' के अंतर्गत रचनाकार {माणिक वर्मा} ने इन पंक्तियों में मानवमात्र के प्रति संवेदना की एवं सहृदयता जैसे मानवमूल्यों की बात कही है | वे कहते है कि जिस प्रकार मोमबत्ती का धागा उसके भीतर जलता है उसी प्रकार हमें भी प्रत्येक मनुष्य की अंतर्मन की पीड़ा समझकर उसे दूर करने का यथासंभव प्रयास करना चाहिए | अर्थात हमें पीड़ित के प्रति सहानुभूति रखनी चाहिए |

**(२) कोई ऐसी शक्ल ____ मुझे अक्सर दिखो ।**
**उत्तर :** हे ईश्वर, मैं चाहता हूँ कि मैं जिसे भी देखूँ, मुझे उसी में तुम नजर आओ। अर्थात मानव मात्र ईश्वर का अंश है।

**(५) कृति पूर्ण कीजिए:**
**गजल में प्रयुक्त प्राकृतिक घटक**
**उत्तर :** (१) फुल
(२) तितली

(३) मोती
(४) सीप

**(६) कवि के अनुसार ऐसे दिखे:**
**उत्तर :** (१) नींव के अंदर
(२) मील का पत्थर
(३) आदमी बनकर
(४) आईना बनकर

**अभिव्यक्ती**
**प्रस्तुत गजल की अपनी पसंदीदा किन्हीं चार पंक्तियों का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।**
**"एक जुगनू ---**
**--- सीप के अन्दर दिखो"**
**उत्तर :** अंधकार में चमकता हुआ जुगनू आशा रूपी किरण के समान है जो अंधकार में प्रकाश का साम्राज्य फैलाता है । अर्थात हताश और निराश मनुष्यों के लिए सदैव उम्मीद की किरण जगाए रखने का संदेश दिया गया है | आगे कवि (माणिक वर्मा) कहते हैं कि मनुष्य के लिए कुछ मर्यादाएं हैं कुछ सीमाएं हैं जिन्हें मानकर वह अपने कर्तव्य का पालन करे, क्योंकि इसी के द्वारा वह जन समुदाय या मानव समाज की सेवा भी कर सकता है । जिस प्रकार एक सीप के अंदर मूल्यवान मोंती छिपा होता है उसी प्रकार हमें भी समाज के कल्याण के लिए मर्यादाओं के भीतर रहकर श्रेष्ठ कर्म करने चाहिए क्योंकि इसी भावना के द्वारा मनुष्य सम्मानित होता है। कवि के द्वारा दी गई पंक्तियों के भीतर यही केंद्रीय भाव छिपा है ।

**यदि मेरा घर अंतरिक्ष में होता,' विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लेखन कीजिए।**
**उत्तर :** पिछले कई वर्षों में अंतरिक्ष विज्ञान में जो प्रगति हुई है, वह सराहनीय है। पहले अंतरिक्ष यात्रा कल्पना से अधिक कुछ नहीं थी लेकिन आज अंतरिक्ष यात्रा के सपने सच हो गए हैं। रूस ने अंतरिक्ष यान के द्वारा अपने अंतरिक्ष यात्री यूरी गागरिन को पहली बार अंतरिक्ष में भेजा था फिर तो अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री नील आर्मस्ट्रांग और एडविन एल्ड्रिन सबसे पहले चंद्रमा पर पहुचनेवाले अंतरिक्ष यात्री हो गए।
अब तो ऐसा लगता है कि कभी-न-कभी हम को भी अंतरिक्ष में जाने का मौका मिल सकता है। लेकिन यह कब संभव होगा, कहा नहीं जा सकता। काश, मेरा घर अंतरिक्ष में होता.... यदि सच में मेरा घर अंतरिक्ष में होता तो कितना अच्छा होता। जो आसमान को दूर से देखा करते हैं, हम उसकी खूब सैर करते। चाँद, सितारों को नजदीक से देखते। बादलों के बीच लुका-छिपी खेलते। परियों के देश में जाते। वे किस तरह रहती हैं, जानने-देखने का अवसर पाते। हम अंतरिक्ष से अपनी सुंदर धरती को देखते। अपने प्यारे भारत को देखते। आकाशगंगा के विभिन्न ग्रहों-उपग्रहों को देखते। सौरमंडल के सबसे सुंदर ग्रह शनि और उसके वलयों को देखते। उनके जितना निकट जा सकते, अवश्य जाते। स्पेस वॉक करते। वहाँ फैली शांति का अनुभव करते। वहाँ के प्रदूषण रहित वातावरण में रहने का मौका मिलता, जिससे हमारा स्वास्थ्य बहुत बढ़िया हो जाता। काश ऐसा हो पाता...